बेइंतहा प्यार

(लघु कथाओं का संसार)

● आलोक कौशिक

समदर्शी प्रकाशन
नव-सृजन के नवीन पथ...

335, देवनगर, मोदीपुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश-250001

इस पुस्तक का कोई भी अंश, कहीं पर भी, बिना लेखक
की अनुमति के उद्धृत नहीं किया जाना चाहिए।

ISBN : 978-93-88049-95-5

सर्वाधिकार © : आलोक कौशिक

मूल्य : ₹60/-

प्रथम संस्करण : मई, 2020

प्रकाशक : समदर्शी प्रकाशन,
335, देवनगर, मोदीपुरम,
मेरठ, उत्तर प्रदेश-250001
मोबाइल नं: 9599323508
Website: www.samdarshiprakashan.com
Email: samdarshi.prakashan@gmail.com

आवरण : समदर्शी

मुद्रक : थोमसन प्रेस, दिल्ली।

समर्पण

मैं यह पुस्तक अपनी पितामही स्वर्गीया गुंजन देवी,
अपने पूज्य पिताश्री पुण्यानंद ठाकुर एवं
अपने प्रिय पुत्र आर्जव कौशिक
को समर्पित करता हूँ।

अनुक्रम

जानकी का घर	5
डॉग लवर	7
दिल वाला टैटू	8
नाजायज़ रिश्ता	10
नालायक़ बेटा	11
बेइंतहा प्यार	12
मज़दूर	14
सदमा	16
जिस्म मंडी की रेशमा	18
धर्म के रक्षक	20
अंधविश्वास	23
सुजाता	24
इज़्ज़त	25
पैसे की जाति	26
दीमक	28
बदला	30
मुख्यमंत्री	32
ब्राह्मण	34
पीपल का पेड़	35
अंशुमालिका	36

जानकी का घर

कई वर्ष पश्चात् दूरदर्शन पर धारावाहिक 'रामायण' के पुनः प्रसारण से कौशल्या देवी बहुत ख़ुश थीं। सुबह के नौ बजते ही टेलीविजन के सामने हाथ जोड़ कर बैठ जाती थीं। आज रामायण देखते हुए वह अत्यंत भावविभोर हो रही थीं। सीता एवं लक्ष्मण को राम के संग वन जाते हुए देखकर कौशल्या देवी की आँखों से अश्रु प्रवाहित होने लगे।

धारावाहिक रामायण के आज का एपिसोड समाप्त होने के पश्चात कौशल्या देवी ने अपने सूखे गले को तर करने के लिए अश्रुओं को आँचल से पोंछते हुए रसोई घर में प्रवेश किया। वहाँ की स्थिति देखकर वह आग बबूला हो उठीं और अपनी बहू को पुकारते हुए बहू के कमरे में घुस गईं। जहाँ उनकी बहू जानकी एकाग्रचित्त होकर पढ़ रही थी। अपनी बहू को पढ़ता हुआ देखकर कौशल्या देवी का क्रोध और बढ़ गया।

''अच्छा, तो महारानी दूध उबलता हुआ छोड़कर यहाँ कलेक्टर बनने की तैयारी में लगी है। उधर सारा दूध उबल कर पूरी रसोई में फैल चुका है। अब कोई चाय भी कैसे पिएगा?''

दूध उबल कर गिर जाने की बात सुनते ही जानकी रसोई घर की तरफ भागी। वहाँ पहुँचकर वह तुरंत रसोई की सफ़ाई में लग गई।

''इससे एक भी काम ठीक से नहीं होता है। बेहोश होकर सारा काम करती है।'' रसोई की ओर आते हुए कौशल्या देवी ने कहा।

''माँ जी, भूल हो गई। मैंने सोचा जब तक दूध गर्म होगा, तब तक थोड़ी पढ़ाई कर लेती हूँ। वैसे भी पढ़ाई के लिए समय तो मिल ही नहीं पाता है। घर का काम निपटाना, फिर बच्चों को सँभालना, इन्हीं सब चीज़ों से फ़ुर्सत नहीं मिल पाती है।'' जानकी ने सरलता से कहा।

''काम नहीं करेगी तो क्या करेगी? क्या तेरे बाप ने तेरे लिए यहाँ नौकर लगा रखे हैं? बीए तो पास कर चुकी है। अब कितना पढ़ेगी? तेरे पति को तो हम लोगों ने इतना पढ़ाया, लेकिन फिर भी अब तक वह सरकारी नौकरी नहीं ले पाया? ज़्यादा पढ़कर तू क्या कलेक्टर बन जाएगी?'' कौशल्या देवी ने क्रोधपूर्ण व्यंग्यात्मक लहज़े में कहा।

''पढ़ाई तो ज्ञानार्जन के लिए की जाती है एवं ज्ञान का सरकारी नौकरी से कोई विशेष संबंध नहीं है। फिर भी मेरे पति सरकारी नौकरी के लिए प्रयत्न तो कर ही रहे हैं। रावण द्वारा सीता का हरण कर लिए जाने के पश्चात प्रभु श्री राम को भी सीता को प्राप्त करने के लिए अत्यधिक प्रयत्न करने पड़े थे। इस कारण

से प्रभु श्रीराम के ज्ञान रूपी सामर्थ्य पर संदेह तो नहीं कर सकते। श्री राम के केवल एक बाण से तो रावण का भी वध नहीं हो सका था। किंतु इससे भगवान श्री राम की शक्ति पर क्या कोई तनिक भी संदेह कर सकता है?'' जानकी ने अत्यंत सहजता से जवाब दिया।

जानकी की बातें सुनकर कौशल्या देवी अत्यंत क्रोधित हो उठीं और जानकी को धमकाते हुए कहने लगीं- ''कल की जन्मी हुई छोकरी, तू मुझे रामायण का प्रवचन देती है। आज से तू मेरे और मेरे पति के लिए खाना नहीं बनाएगी। एक तो सारा दूध बर्बाद कर दिया और ऊपर से मेरे घर में रहकर मुझसे ही ज़बान लड़ाती है। इतनी ही तकलीफ़ है यहाँ पर तुझे, तो छोड़ दे मेरा घर।''

कौशल्या देवी की बातें सुनकर जानकी सोचने लगी- ''आख़िर माता सीता का घर कौन सा था- महाराजा जनक का महल, महाराजा दशरथ का महल, अशोक वाटिका अथवा पति के द्वारा परित्याग किए जाने के उपरांत वन में महर्षि वाल्मीकि जी की कुटिया।''

❖ ❖

डॉग लवर

ओमप्रकाश भारतीय उर्फ़ पलटू जी शहर के सबसे बड़े उद्योगपति होने के साथ ही फ़ेमस डॉग लवर अर्थात् प्रसिद्ध कुत्ता प्रेमी भी थे। पलटू जी ने लगभग सभी नस्ल के कुत्ते पाल रखे थे। उन्हें कुत्तों से इतना प्रेम था कि कुत्तों के मल-मूत्र भी वे स्वयं साफ़ किया करते थे। उनके श्वान प्रेम पर अख़बार एवं पत्रिकाओं में सैकड़ों लेख प्रकाशित हो चुके थे।

क़रीब एक दर्जन नौकर पलटू जी के यहाँ काम करते थे। लेकिन मोहन मुख्य नौकर था। तबीयत ठीक ना होने की वज़ह से आज मोहन ने अपनी जगह अपनी पत्नी मालती को काम पर भेजा था। मालती अपने साथ अपने ढाई वर्षीय बेटे को साथ लेकर पलटू जी के यहाँ काम करने आ गयी। भोजन कक्ष के फर्श पर अपने बेटे को बिठाकर मालती अपना काम करने लगी। दो घंटे बीत गये। उधर मालती अपने काम में मशगूल थी और इधर उसका बेटा खेलते-खेलते पलटू जी के शयनकक्ष में जा पहुँचा और उनके बिस्तर पर खेलने लगा। उस समय पलटू जी अपनी बालकनी में बैठकर कुकुर प्रेम पर कविता लिख रहे थे। अपनी कविता पूरी करने के पश्चात जब वो अपने शयनकक्ष में पहुँचे तो उन्होंने देखा कि मालती का बेटा उनके बिस्तर पर मल त्याग कर रहा था। तब तक मालती भी अपने बेटे को ढूँढ़ते हुए पलटू जी के शयनकक्ष तक पहुँच चुकी थी। बिस्तर पर मल त्याग करता हुआ देखकर पलटू जी आग बबूला हो गये और भारत में औरतों को दी जाने वाली सारी गालियाँ कुछ ही पलों में मालती को दे डालीं।

तब तक मालती डर के मारे अपने बेटे को अपनी पीठ पर लादकर अपने हाथों से मल को उठा चुकी थी। अपने शब्दकोश की सारी गालियाँ दे डालने के पश्चात पलटू जी ने मालती को तुरंत घर से निकल जाने का आदेश दे डाला और साथ ही मोहन को काम से निकाले जाने का फ़रमान जारी कर दिया।

अगले दिन सुबह मोहन काम की तलाश में निकल पड़ा। इधर पलटू जी अपनी बालकनी में बैठकर अख़बार में छपी कुकुर प्रेम पर लिखी गई अपनी कविता को देखकर मुस्कुरा रहे थे।

❖ ❖

दिल वाला टैटू

क्षमा मिश्रा नाम था उसका। लेकिन मोहल्ले के सारे लड़के उसे छमिया कह कर पुकारते थे। महज़ अठारह बरस की उम्र में मोहल्ले में हुए अठाईस झगड़ों का कारण बन चुकी थी वो। उसका कोई भी आशिक़ चार महीने से ज़्यादा उसकी फरमाइशों को पूरा नहीं कर पाता था। इसलिए प्रत्येक चार महीने बाद क्षमा के दिल के रजिस्टर पर नए आशिक़ का नामांकन होता था। लेकिन जब भी कोई पुराना आशिक़ उसके दिल में रहने की ज़िद या जुरअत करता तो वह अपने पिता से छेड़खानी की झूठी शिक़ायत कर उसकी बेरहमी से पिटाई करवा देती। क्षमा के पिता पुलिस डिपार्टमेंट में हेड कांस्टेबल के पद पर कार्यरत थे। मोहल्ले के तक़रीबन सभी लड़के क्षमा के भूतपूर्व आशिक़ों की सूची में स्थान प्राप्त कर चुके थे एवं क्षमा के पिता से पिट भी चुके थे। इस बार क्षमा का नया आशिक़ उसके मोहल्ले का नहीं था।

क्षमा के नए प्रेम प्रसंग को अभी दो महीने ही हुए थे कि अचानक क्षमा ने घर से निकलना बंद कर दिया। क़रीब एक महीने तक जब मोहल्ले के लड़कों को क्षमा का दीदार नहीं हुआ तो उन लोगों ने इस संबंध में उसकी छोटी बहन छवि से पूछताछ की, जो क्षमा के प्रत्येक प्रेम प्रसंगों में संदेशवाहक का काम किया करती थी। पहले तो छवि ने कारण बताने से मना कर दिया लेकिन जब लड़कों ने बदले में मोबाइल फोन देने का प्रलोभन दिया तो उसने बताना शुरू किया- ''दीदी का नया बॉयफ्रेंड किसी दूसरे शहर का था। उसने दीदी को बताया था कि वह एक कंपनी में मैनेजर है और उसी कंपनी के काम से इस शहर में आया है। वह एक होटल में ठहरा हुआ था। दीदी कभी-कभार उसके साथ शॉपिंग मॉल और पार्क जाया करती थी। एक दिन दीदी के बॉयफ्रेंड ने दीदी को मिलने के लिए होटल आने को कहा। दीदी जब होटल पहुँची तो उसका बॉयफ्रेंड उसे उस कमरे में ले गया जिस कमरे में वह ठहरा हुआ था। थोड़ी देर बाद उसने दीदी को मिनरल वाटर पीने को दिया, जिसे पीते ही दीदी बेहोश हो गई। लगभग दो घंटे बाद जब दीदी को होश आया तो उसने उस कमरे में ख़ुद को अकेला पाया। थोड़ी देर बाद जब दीदी के दाहिने हाथ में दर्द हुआ तो उसने देखा कि उसके हाथ पर दिल वाला टैटू बना हुआ था, जिसमें लिखा था- 'माशूक़ा मोहल्ले की'। होटल के कमरे से निकलने के तुरंत बाद जब दीदी ने अपने बॉयफ्रेंड को फोन लगाया तो उसका फोन स्थायी रूप से बंद बताया। दीदी ने होटल में जब उसके बारे में पूछताछ की तो पता चला कि उसने जो नाम दीदी को बता रखा था उस नाम का कोई भी व्यक्ति उस होटल में ठहरा ही नहीं था।

घर आने के बाद दीदी ने रोते हुए मुझसे सारी बातें बताई। जब यह बात पापा को पता चली तो उन्होंने दीदी को बहुत पीटा। हम लोगों ने टैटू आर्टिस्टों से टैटू को मिटाने के बारे में बात की तो उन लोगों ने बताया कि यह एक ख़ास तरह का परमानेंट टैटू है, जिसे हटाना बहुत ही मुश्किल और जोख़िम भरा है। उस टैटू की वज़ह से दीदी बहुत परेशान रहने लगी है, इसलिए अब घर से नहीं निकलती है।''

छवि की बातें सुनकर मोहल्ले के लड़के ख़ुश नहीं बल्कि परेशान थे एवं एक दूसरे को शक की नज़रों से देख रहे थे।

❖ ❖

नाजायज़ रिश्ता

''अगले हफ़्ते डैडी घर आ रहे हैं। मैं आप दोनों की करतूतों के बारे में डैडी को ज़रूर बताऊँगी। घर को नर्क बना कर रख दिया है।'' ज्योति ने अपनी माँ और चाचा को धमकाते हुए कहा।

ज्योति तेईस वर्षीया युवती थी। ज्योति के पिताजी निर्मल सिंह फ़ौजी थे और माँ नीलम देवी नर्स थीं। मनीष और आकाश दो छोटे भाई थे। दोनों दूसरे शहर में रहकर पढ़ाई करते थे। फ़ौज में सेवारत होने के कारण निर्मल सिंह अपने घर पर अपने परिवार के संग बहुत कम समय व्यतीत कर पाते थे। ज्योति के चाचा ने दो शादियाँ की थीं। लेकिन शराबी एवं व्याभिचारी होने के कारण दोनों शादियाँ असफल रहीं। अपनी पत्नी के कहने पर निर्मल सिंह ने अपने भाई को अपने घर में शरण दे दी थी।

माँ और चाचा को धमकाने के बाद ज्योति अपने कमरे में चली गई। दरअसल, आज फिर उसने अपनी माँ और चाचा को संभोगरत अवस्था में देख लिया था।

अगले हफ़्ते जब निर्मल सिंह घर आए तो व्यथित होते हुए ज्योति ने उन्हें अपनी माँ और चाचा के प्रेम प्रसंग के बारे में सब कुछ बता दिया।

निर्मल सिंह ने जब ज्योति के परोक्ष में अपनी पत्नी और अपने भाई से इस संबंध में पूछताछ की तो उन लोगों ने उन्हें मोबाइल फोन में एक वीडियो क्लिप दिखाया। जिसमें ज्योति और उसका प्रेमी आलिंगनबद्ध होके एक दूसरे को चूम रहे थे।

वीडियो क्लिप दिखाने के बाद नीलम देवी ने अपने पति से कहा- ''जब हम दोनों ने ज्योति को इस नाजायज़ रिश्ते से दूर रहने को कहा तो ज्योति ने हमारी बात मानने से ढीठतापूर्वक इंकार कर दिया और कहा कि वह अपने अंतर्जातीय प्रेमी से ही विवाह करेगी, क्योंकि वह दो महीने की गर्भवती है। आपके सामने उसका भेद कहीं हम दोनों खोल ना दें, इस डर से उसने ऐसा घटिया आरोप हम दोनों पर लगा दिया।''

अगले दिन ज्योति की हत्या के जुर्म में पुलिस ने निर्मल सिंह को गिरफ़्तार कर लिया। अदालती कार्यवाही के पश्चात् निर्मल सिंह को कारागार भेज दिया गया। शव परीक्षण विवरण रिपोर्ट में पाया गया कि ज्योति गर्भवती नहीं थी।

❖ ❖

नालायक़ बेटा

रामानंद बाबू को अस्पताल में भर्ती हुए आज दो महीने हो गये। वे कर्क रोग से ग्रसित हैं। उनकी सेवा-सुश्रुषा करने के लिए उनका सबसे छोटा बेटा बंसी भी उनके साथ अस्पताल में ही रहता है। बंसी की माँ को गुज़रे हुए क़रीब पाँच वर्ष हो चुके हैं। अपनी माँ के देहावसान के समय बंसी तक़रीबन बीस वर्ष का था।

सुबह के आठ बज रहे हैं। बंसी अपने पिता के लिए फल लाने बाज़ार गया है। तभी नियमित जाँच करने हेतु डॉक्टर रामाश्रय का आगमन हुआ। रामानंद बाबू और डॉक्टर रामाश्रय लगभग एक ही उम्र के हैं। रामानंद बाबू की शारीरिक जाँच करने के उपरांत डॉक्टर साहब ने उनसे पूछा, ''आपकी केवल एक ही संतान है क्या?''

''नहीं डॉक्टर साहब, बंसी के अलावा भी मेरे दो पुत्र एवं दो पुत्रियाँ हैं,'' रामानंद बाबू ने जवाब दिया।

''फिर दो महीनों तक आपसे कोई मिलने क्यों नहीं आया?'' डॉक्टर साहब ने विस्मित होकर पूछा।

''वे सभी सरकारी सेवाओं में उच्च पदों पर आसीन हैं। आप तो जानते ही हैं, अभी के समय में अधिकारियों को साँस लेने तक की फ़ुर्सत नहीं है। वैसे, बंसी से फोन पर सभी मेरी ख़ैरियत पूछते रहते हैं। मेरे सभी बच्चे बचपन से ही होनहार थे। केवल एक बंसी ही नालायक़ था। इसलिए अपने भाई-बहनों की तरह नहीं बन सका।'' रामानंद बाबू ने बड़ी सहजता से कहा।

''काश! बंसी जैसा नालायक़ बेटा हर बाप के पास होता।'' ...डॉक्टर साहब यह कहते हुए वहाँ से चले गये।

❖ ❖

बेइंतहा प्यार

डीएम ऑफ़िस से आने के बाद से ही दीपमाला बहुत दुखी और परेशान थी। वह आईने के सामने खड़ी होकर अपने ढलते यौवन और मुरझाए सौंदर्य को देखकर बेतहाशा रोए जा रही थी। ऐसा लग रहा था मानो वह आईने से कह रही हो कि तुम भी लोगों की तरह झूठे हो। आज तक मुझे सिर्फ़ झूठ दिखाते रहे। कभी सच देखने ही नहीं दिया।

उसने रात का खाना भी नहीं खाया। पति और दोनों बच्चे खाना खाकर सो चुके थे। लेकिन उसे नींद नहीं आ रही थी।

दीपमाला की शादी को पंद्रह वर्ष हो चुके थे। पति और दोनों बच्चों के साथ उसका जीवन अब तक सुखपूर्वक ही व्यतीत हुआ था।

जी भरकर रो लेने के बाद वह अपने बेडरूम में आई। वहाँ उसने सोए हुए अपने पति को ग़ौर से देखा। आज पहली बार उसका पति उसे काला-कलूटा, बेडौल शरीर वाला कुरूप व्यक्ति दिख रहा था। दीपमाला की बेचैनी बढ़ती जा रही थी।

रुद्रव्रत। यही नाम था उसका। जिसे आज डीएम चेंबर में देखने के बाद से दीपमाला को सिर्फ़ सच दिख रहा था।

एक समय था, जब दीपमाला रुद्रव्रत से बेइंतहा मोहब्बत करती थी। रूद्रव्रत से उसकी पहली मुलाक़ात आज से क़रीब अठारह साल पहले कॉलेज में हुई थी। मुस्कुराता चेहरा, गठीला बदन, शरारती आँखें। कॉलेज की लड़कियाँ उसे सलमान कहकर पुकारती थीं। उसे देखते ही दीपमाला को पहली नज़र वाला प्यार हो गया था। यूँ तो कॉलेज की सभी लड़कियाँ अपने सलमान की ऐश्वर्या बनने की कोशिश में लगी हुई थीं। लेकिन दीपमाला बाज़ी मार गई।

तीन वर्षों तक दीपमाला रुद्रव्रत के प्रेम की डोर से बँधी रही। लेकिन, कॉलेज की पढ़ाई ख़त्म होते-होते उसे लगने लगा कि सुखी जीवन सिर्फ़ प्रेम से प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसलिए उसने ख़ुद को इस प्रेम रूपी डोर से मुक्त कर लिया और एक धनाढ्य व्यवसायी से शादी कर ली।

वो कहते हैं ना, कि अतीत से कभी पीछा नहीं छूटता। आज दीपमाला के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ था।

अगले हफ्ते दीपमाला के बड़े बेटे का जन्मदिन था और वह इस बार ज़िले की नई ज़िलाधिकारी को भी इस ख़ुशी के मौक़े पर आमंत्रित करना चाहती थी। इसलिए उन्हें आमंत्रित करने के लिए वह अपने पति के संग डीएम ऑफ़िस गई थी। कुछ देर अतिथि कक्ष में इंतज़ार करने के बाद जब वह डीएम के चेंबर में

दाख़िल हुई तो अप्सरा जैसी ख़ूबसूरत ज़िलाधिकारी को देखकर वह दंग रह गई। उसने सोचा- शायद 'ब्यूटी विद ब्रेन' इसी को कहते हैं। अपने आने का कारण दीपमाला डीएम साहिबा से बता ही रही थी तभी एक शख़्स क़रीब पाँच साल के एक बच्चे के साथ बिना इज़ाज़त डीएम के चेंबर में दाख़िल हो गया। जिसे देखते ही डीएम साहिबा अपनी कुर्सी से उठकर खड़ी हो गईं और उस बच्चे को अपनी गोद में उठा लिया।

वह व्यक्ति डीएम साहिबा से मुख़ातिब होते हुए बोला- ''आर्जव आज बहुत ज़िद करने लगा कि मम्मी से मिलना है। इसलिए लाना पड़ा।''

''कोई बात नहीं,'' डीएम साहिबा ने कहा।

''चलो आर्जव, अब चलते हैं। मम्मी को अपना काम करने दो।''

''ओके पापा, लेट्स गो। बाय मम्मी।'' यह कहते हुए वह बच्चा उस व्यक्ति के साथ वहाँ से चला गया।

उस शख़्स को, बच्चे को और डीएम साहिबा को देखने के बाद दीपमाला के दिमाग़ ने काम करना लगभग बंद कर दिया था।

वह शख़्स और कोई नहीं बल्कि रुद्रव्रत था। आज भी वह हू-ब-हू वैसा ही दिखता था, जैसा दीपमाला ने उसे कॉलेज में पहली बार देखा था।

ख़ुद को सँभालते हुए दीपमाला ने डीएम साहिबा की ओर मुख़ातिब होते हुए कहा- ''अगर आप बुरा ना मानें तो एक बात पूछूँ?''

''हाँ, पूछिए।'' डीएम साहिबा ने कहा।

''आपके पति क्या करते हैं?''

''मुझसे बेइंतहा प्यार।'' डीएम साहिबा ने मुस्कुराते हुए कहा।

❖ ❖

पूरा पढ़ने के लिए अपनी प्रति आज ही खरीदें।